

भगवान महावीर स्वामी की शिक्षाएँ

– डॉ. आशीष जैन आचार्य, शाहगढ़ (सागर)
(राष्ट्रपति पुरस्कार प्राप्त)

महामंत्री, प्राकृत भाषा विकास फाउण्डेशन

संयुक्त मंत्री, अ. भा. दि. जैन शास्त्रपरिषद्

भगवान महावीर स्वामी जैन धर्म के चौबीसवें तीर्थंकर हैं। उन्होंने अपने जीवन को तप, त्याग और आत्मानुशासन की साधना से आदर्श बनाते हुए न केवल स्वयं आत्मकल्याण प्राप्त किया, बल्कि समस्त भव्य जीवों के लिए मुक्ति और कल्याण का मार्ग प्रशस्त किया। उनका जीवन केवल एक धार्मिक व्यक्तित्व का जीवन नहीं, बल्कि मानवता के लिए मार्गदर्शक प्रकाश है।

भगवान महावीर स्वामी ने अपने उपदेशों के माध्यम से यह स्पष्ट किया कि मनुष्य का वास्तविक उत्थान बाहरी वैभव से नहीं, बल्कि आंतरिक शुद्धि, संयम और आत्मजागरण से होता है। उनके द्वारा प्रतिपादित धर्म आज भी मानवता के लिए शांति, करुणा और नैतिकता का मार्ग दिखा रहा है।

महावीर स्वामी की शिक्षाएँ केवल किसी एक समुदाय या धर्म तक सीमित नहीं हैं, बल्कि वे संपूर्ण मानव समाज के लिए सार्वभौमिक और शाश्वत सिद्धांत हैं। उन्होंने मनुष्य को यह समझाया कि जीवन की सच्ची सार्थकता स्वयं को पहचानने, अपने विकारों को जीतने और समस्त जीवों के प्रति करुणा रखने में है।

भगवान महावीर स्वामी ने मानव जीवन को श्रेष्ठ बनाने के लिए पाँच महान व्रतों का उपदेश दिया— अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य और अपरिग्रह। ये पाँच सिद्धांत केवल धार्मिक नियम नहीं, बल्कि संतुलित, शांतिपूर्ण और नैतिक जीवन के आधारस्तंभ हैं।

1. अहिंसा – जीवन का सर्वोच्च धर्म

अहिंसा महावीर स्वामी की शिक्षाओं का मूल आधार है। उन्होंने कहा कि किसी भी जीव को मन, वचन और कर्म से कष्ट पहुँचाना हिंसा है। महावीर स्वामी की अहिंसा केवल शारीरिक हिंसा से बचने

तक सीमित नहीं है, बल्कि उन्होंने मानसिक और वाचिक हिंसा से भी बचने की शिक्षा दी। क्रोध, द्वेष, घृणा, कटु वचन और दुर्भावना भी हिंसा केही रूप हैं।

उन्होंने स्पष्ट कहा – “जिस प्रकार हमें अपना जीवन प्रिय है, उसी प्रकार प्रत्येक जीव को भी अपना जीवन प्रिय है।” इसलिए सभी जीवों के प्रति मैत्री, करुणा और सह-अस्तित्व की भावना रखना ही सच्ची अहिंसा है।

आज विश्व में बढ़ती हिंसा, आतंकवाद और युद्ध की स्थितियों में महावीर स्वामी की अहिंसा की शिक्षा अत्यंत प्रासंगिक है। यदि मानव समाज इस सिद्धांत को अपनाए, तो विश्व में शांति और सद्भाव की स्थापना संभव है।

2. सत्य – चरित्र की आधारशिला

भगवान महावीर स्वामी ने सत्य को जीवन की नैतिकता का आधार माना। उन्होंने कहा कि मनुष्य को सत्य बोलना चाहिए, सत्य सोचना चाहिए और सत्य का आचरण करना चाहिए। सत्य केवल वाणी का गुण नहीं है, बल्कि विचार और व्यवहार की पवित्रता भी है। सत्य बोलने से व्यक्ति के भीतर

- आत्मविश्वास बढ़ता है
- चरित्र की दृढ़ता विकसित होती है
- समाज में विश्वास और सद्भाव स्थापित होता है।

असत्य मनुष्य को भ्रम, भय और अशांति की ओर ले जाता है, जबकि सत्य मन की शांति और आत्मबोध का मार्ग प्रशस्त करता है।

3. अस्तेय – नैतिकता और ईमानदारी का सिद्धांत

अस्तेय का अर्थ है—दूसरों की वस्तु को बिना अनुमति ग्रहण न करना।

महावीर स्वामी ने बताया कि किसी भी प्रकार से दूसरों के अधिकार का हनन करना अधर्म है। चोरी केवल भौतिक वस्तुओं की ही नहीं होती, बल्कि किसी के अधिकार, सम्मान या श्रम का अनुचित उपयोग करना भी अस्तेय का उल्लंघन है।

अस्तेय का पालन करने से समाज में –

- विश्वास

- न्याय
- सहयोग

की भावना विकसित होती है।

4. ब्रह्मचर्य – आत्मसंयम का मार्ग

महावीर स्वामी ने ब्रह्मचर्य को आत्मसंयम और आध्यात्मिक उन्नति का आधार बताया। ब्रह्मचर्य केवल शारीरिक संयम नहीं है, बल्कि यह मन, इंद्रियों और भावनाओं पर नियंत्रण का प्रतीक है। ब्रह्मचर्य के माध्यम से मनुष्य अपनी ऊर्जा को आध्यात्मिक साधना और आत्मज्ञान की दिशा में केंद्रित कर सकता है।

संयमित जीवन मनुष्य को

- मानसिक स्थिरता
- आत्मबल
- आंतरिक शांति प्रदान करता है।

5. अपरिग्रह – संतोष का मार्ग

अपरिग्रह का अर्थ है अत्यधिक संग्रह और आसक्ति का त्याग। महावीर स्वामी ने बताया कि अधिक वस्तुओं का संग्रह मनुष्य के भीतर लोभ, मोह और असंतोष को जन्म देता है।

उन्होंने कहा— “सुख वस्तुओं के संग्रह में नहीं, बल्कि आवश्यकताओं के संयम में है।”

अपरिग्रह का पालन करने से व्यक्ति

- संतोषी बनता है
- मानसिक तनाव से मुक्त रहता है
- समाज में समानता की भावना बढ़ती है।

6. तप – आत्मशुद्धि का साधन

महावीर स्वामी ने तपस्या को आत्मशुद्धि का प्रभावी साधन बताया। तप का अर्थ केवल शारीरिक कष्ट सहना नहीं है, बल्कि इंद्रियों पर नियंत्रण, इच्छाओं का संयम और आत्मानुशासन है। तप के माध्यम से मनुष्य अपने भीतर के विकारों को दूर कर आत्मिक शक्ति और मानसिक पवित्रता प्राप्त करता है।

7. समत्व – मानसिक संतुलन का सिद्धांत

महावीर स्वामी ने जीवन में समत्व भाव रखने की शिक्षा दी।

समत्व का अर्थ है – सुख-दुःख, लाभ-हानि, सम्मान-अपमान में समान दृष्टि रखना। जो व्यक्ति परिस्थितियों के प्रभाव से विचलित नहीं होता, वही आत्मिक स्थिरता और मानसिक शांति प्राप्त करता है। समत्व जीवन को संतुलित और शांत बनाता है।

8. निर्वाण – जीवन का सर्वोच्च लक्ष्य

महावीर स्वामी के अनुसार निर्वाण मानव जीवन का सर्वोच्च लक्ष्य है। निर्वाण का अर्थ है – आत्मा की पूर्ण शुद्धि और जन्म-मरण के चक्र से मुक्ति। जब आत्मा कर्मबंधन से मुक्त हो जाती है, तब वह अनंत ज्ञान, अनंत दर्शन और अनंत सुख को प्राप्त करती है।

9. दया और करुणा – मानवता का मूल भाव

महावीर स्वामी ने समस्त जीवों के प्रति दया और करुणा रखने की शिक्षा दी। उन्होंने कहा कि सच्ची मानवता वही है, जिसमें मनुष्य दूसरों के दुःख को अपना दुःख समझे। करुणा के बिना धर्म अधूरा है। करुणा ही वह शक्ति है जो समाज में प्रेम, सहानुभूति और सहयोग की भावना उत्पन्न करती है।

10. साधना – आत्मोन्नति का मार्ग

महावीर स्वामी ने बताया कि सच्ची साधना आत्मशुद्धि का मार्ग है। ध्यान, तप, स्वाध्याय और आत्मचिंतन के माध्यम से मनुष्य अपने भीतर की चेतना को जाग्रत कर सकता है। साधना मनुष्य को आत्मज्ञान और मोक्ष की दिशा में अग्रसर करती है।

महावीर स्वामी की अन्य महत्वपूर्ण शिक्षाएँ

आत्मनिर्भरता का सिद्धांत – महावीर स्वामी ने कहा कि मनुष्य स्वयं अपने जीवन का निर्माता है।

सादगी और वैराग्य – उन्होंने सादा जीवन और उच्च विचार का आदर्श प्रस्तुत किया।

समाज के प्रति दायित्व – मनुष्य केवल अपने लिए नहीं, बल्कि समाज के कल्याण के लिए भी उत्तरदायी है।

सच्ची पूजा- सच्ची पूजा बाहरी आडंबर में नहीं , बल्कि आत्मा की शुद्धि और सद्गुणों के विकास में है।

सर्वधर्म समभाव- महावीर स्वामी ने सभी धर्मों के प्रति सम्मान की भावना रखने की शिक्षा दी।

कर्म सिद्धांत- उन्होंने स्पष्ट किया कि मनुष्य के कर्म ही उसके भविष्य का निर्माण करते हैं।

आत्मनिरीक्षण- अपने दोषों को पहचानना और उन्हें दूर करना ही आत्मसुधार का प्रथम चरण है।

उपसंहार

भगवान महावीर स्वामी की शिक्षाएँ आज भी उतनी ही प्रासंगिक हैं जितनी प्राचीन काल में थीं। अहिंसा, सत्य, अपरिग्रह और संयम के सिद्धांत केवल आध्यात्मिक उन्नति का मार्ग ही नहीं , बल्कि मानव समाज में शांति और नैतिकता की स्थापना के आधार हैं। आज जब विश्व हिंसा , लालच और असंतुलन से जूझ रहा है , तब महावीर स्वामी का संदेश मानवता के लिए एक प्रकाशस्तंभ के समान है।

यदि मानव समाज इन शिक्षाओं को अपने जीवन में अपनाए , तो निश्चित ही व्यक्ति का आत्मिक विकास और विश्व में शांति की स्थापना संभव है।

महावीर स्वामी का संदेश आज भी उतना ही प्रासंगिक है- “जीओ और जीने दो।”